UGC Approved Jr.No.43053

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

May 2018, Issue-41, Vol-04

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell.07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

अनुसार देश मे कुल ४३.५३ बच्चे बाल मजदूरी कर रहे है। इस जनगणना के आधार पर बालश्रम मे कमी देखी गयी है।

सन्दर्भ सूची

- भार्गव प्रमिला एच ,बाल मजदूरी उन्मूलन किसका दायित्व ,रावत पब्लिकेशन गुवाहाटी २००३।
- सेकर,हेलन आर ,डिमरी पंकज नाथ ,फिलिप ए.नाथ , बाल श्रम के उन्मूलन के लिए सामाजिक सुरक्षा योंजनाओं का अभिसरण , वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान २०१५।
- सिंह राजवीर ,महिला एंव बाल विकास ,इशिका पब्लिशिंग हाउज जयपुर सन २०१३
- http;//www.essaysinhindi.com/social-issues/child-labour/ckyJfed ,d&tfVy&leL;k /4115
- 5Http;//m.hindi.webdunia.com/hindi-literature-articles/child-labour-11606300033-1.htm .
- Https://www,google.com.in/amp/m.pun}abkesari.in/blog/news/their-kids-childhood-snatch-feloy-501523'/,3famp
- http://icsehindi.com/garibi-aur-ashiksha-poverty-and-illiteracy-in-india

❑❑❑

41

लोकतन्त्र के आईने में रघुवीर सहाय की कविता

डॉ.गौरी त्रिपाठी,
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय
,मोहान रोड लखनऊ

****

आधुनिकता की शुरुआत व्यक्ति और समाज के चिंतन से मानी जाती हैद्य व्यक्ति और समाज का स्वभाव कभी एक जैसा नहीं रहा। ये सम्बन्ध कभी विरोधपूर्ण तो कभी सहयोगी रहे हैंद्य लोकतंत्र व्यक्ति और समाज के सहयोगपूर्ण सम्बन्ध का लक्ष्य लेकर प्रकाश में आयाद्य लोकतंत्रको सामान्यत: राजतंत्र की विलोम शासनदृप्रणाली के रूप में जाना जाता हैद्य शासन—प्रणाली के अतिरिक्त यह एक जीवन—दर्शन और विचार—प्रणाली भी है

साठोत्तरी कविता में लोकतन्त्र और लोकतंन्त्र से मोहभंग की स्थितियाँ लगभग प्रत्येक कवि में दिखाई देती है। लोकतन्त्र की स्थापना पर बहुत कुछ लिखा गया है इनमें एक नाम है रघुवीर सहाय का। रघुवीर सहाय की कविता में काव्य—यात्रा स्वतंत्र भारत में लोकतंत्र की विचार—यात्रा हैद्य शासन—प्रणाली के रूप में लगभग पांच दशक के लोकतंत्र की विकास—यात्रा हमें रघुवीर सहाय के कवि—कर्म में देखने को मिल जाती हैद्य इस यात्रा में प्रारम्भ से लेकर बीसवीं सदी के अंत तक लगभग आधी सदी का भारतीय जनमानस नजर आता हैद्य दूसरा सप्तक' के वक्तव्य में रघुवीर सहाय कहते हैं— ''शमशेर बहादुर का यह कहना मुझे बराबर याद रहेगा कि जिंदगी में तीन चीजों की बड़ी जरूरत है, ऑक्सीजन, मार्क्सवाद और अपनी वह